

## प्रिलमिस फैक्ट्स: 04 जून, 2020

- [भारतीय औषधि एवं होम्योपैथी के लिये औषधिकोश आयोग](#)
- [सवदेस](#)
- [श्यामा प्रसाद मुखर्जी ट्रस्ट](#)
- [एफएएसटी](#)

### भारतीय औषधि एवं होम्योपैथी के लिये औषधिकोश आयोग

### Pharmacopoeia Commission for Indian Medicine & Homoeopathy

हाल ही में प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने आयुष मंत्रालय के अंतर्गत अधीनस्थ कार्यालय के रूप में 'भारतीय औषधि एवं होम्योपैथी के लिये औषधिकोश आयोग' (Pharmacopoeia Commission for Indian Medicine & Homoeopathy- PCIM&H) की पुनर्स्थापना को अपनी मंजूरी दे दी।

#### प्रमुख बटु:

- इस आयोग में वर्ष 1975 में उत्तर प्रदेश के गाज़ियाबाद में स्थापित दो केंद्रीय प्रयोगशालाओं [भारतीय औषधि के लिये औषधिकोष प्रयोगशाला (Pharmacopoeia Laboratory for Indian Medicine- PLIM) और होम्योपैथिक औषधिकोष प्रयोगशाला (Homoeopathic Pharmacopoeia Laboratory- HPL)] का वलिय कथिा गया है।
- आयुष मंत्रालय के अंतर्गत वर्ष 2010 में स्थापित 'भारतीय औषधि एवं होम्योपैथी के लिये औषधिकोश आयोग' (PCIM&H) एक स्वयत्तशासी संगठन है।

#### तीनों संस्थानों के वलिय का उद्देश्य:

- इस वलिय का उद्देश्य प्रभावी वनियमन एवं गुणवत्ता नियंत्रण की दृशा में आयुर्वेद, सदिध, यूनानी एवं होम्योपैथी दवाओं के नतीज़ों के मानकीकरण को बढ़ाने के लिये तीनों संस्थानों की बुनयादी ढाँचा सुवधियों, तकनीकी जनशक्ति और वित्तीय संसाधनों का अधिकतम उपयोग करना है।
- इसका एक अन्य उद्देश्य 'ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स रूलस, 1945' (Drugs and Cosmetics Rules, 1945) में आवश्यक संशोधन करके PCIM&H एवं इसकी प्रयोगशालाओं के वलिय वाले ढाँचे को कानूनी दर्जा देना भी है।

#### वलिय का लाभ:

- यह वलिय आयुष दवा मानकों के सामंजस्यपूर्ण विकास तथा औषधिकोष एवं सूत्रीकरण (पंजीकृत कथिा गए नुस्खे) के प्रकाशन की सुवधिया प्रदान करेगा।
- वलिय के बाद PCIM&H के पास आयुष मंत्रालय के अंतर्गत पर्याप्त प्रशासनिक ढाँचा होगा जिससे औषधिकोष आधारित कार्य की क्षमता एवं परणामों में वृद्धि तथा आयुर्वेद, सदिध, यूनानी और होम्योपैथी औषधियों के औषधिकोश मानकों के परस्पर हतियों को हासलि करने का प्रयास कथिा जाएगा।
- इससे औषधियों के मानकीकरण आधारित कार्य के दुहराव एवं ओवरलेपिंग को रोका जा सकेगा जिससे संसाधनों का प्रभावी तरीके से अधिकतम इस्तेमाल हो सकेगा।

COVID-19 के कारण [बंदे भारत मशिन](#) के तहत विश्व के विभिन्न देशों से वापस लौटने वाले कुशल कर्मचारियों के सर्वश्रेष्ठ उपयोग हेतु भारत सरकार ने इन नागरिकों का कौशल मानचित्रण करने के लिये एक नई पहल 'स्वदेस' (SWADES- Skilled Workers Arrival Database for Employment Support) शुरू की।

## उद्देश्य:

- इसका उद्देश्य भारतीय एवं विदेशी कंपनियों की मांग को समझने और उसे पूरा करने के लिये उनके कौशल एवं अनुभव के आधार पर योग्य नागरिकों का एक डेटाबेस बनाना है।

## प्रमुख बद्धि:

- यह भारत सरकार के कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय, नागरिक उद्घटन मंत्रालय और विदेश मंत्रालय की एक संयुक्त पहल है।
- इस पहल के तहत लौटने वाले नागरिकों को एक ऑनलाइन 'स्वदेस स्किल्स कार्ड' भरना आवश्यक है।
  - एकत्रित जानकारी को देश में नियोजन के उपयुक्त अवसरों के लिये कंपनियों के साथ साझा किया जाएगा।
  - यह कार्ड राज्य सरकारों, उद्योग संघों एवं नियोक्ताओं सहित प्रमुख इतिधारकों के साथ विचार-विमर्श के ज़रिये लौटने वाले नागरिकों को रोज़गार के उपयुक्त अवसर प्रदान करने के लिये एक रणनीतिक ढाँचा प्रदान करेगा।

## स्वदेस कौशल फॉर्म/कार्ड:

- 'स्वदेस कौशल फॉर्म' को 30 मई, 2020 को ऑनलाइन प्रसारित किया गया था और 3 जून, 2020 तक इसमें लगभग 7000 पंजीकरण किये जा चुके हैं।
- अब तक एकत्र किए गए आँकड़ों में जहाँ से नागरिक वापस लौट रहे हैं उन शीर्ष देशों में संयुक्त अरब अमीरात, ओमान, कतर, कुवैत और सऊदी अरब शामिल हैं।
- कौशल मानचित्रण के अनुसार इन नागरिकों को मुख्य रूप से तेल एवं गैस, विनिर्माण, पर्यटन, मोटर वाहन और विमानन जैसे क्षेत्रों में नियोजित किया गया था।

## श्यामा प्रसाद मुखर्जी ट्रस्ट

### Syama Prasad Mookerjee Trust

हाल ही में प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने ['कोलकाता पोर्ट ट्रस्ट'](#) (Kolkata Port Trust) का नया नाम 'श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट ट्रस्ट' (Syama Prasad Mookerjee Trust) रखने की अनुमति दी।

## प्रमुख बद्धि:

- उल्लेखनीय है कि 'कोलकाता पोर्ट ट्रस्ट' के 'बोर्ड ऑफ ट्रस्टी' ने 25 फरवरी, 2020 को हुई बैठक में एक प्रस्ताव पारित कर विधिवित्ता, शक्ति, विचारक एवं जन साधारण के नेता श्यामा प्रसाद मुखर्जी की बहुआयामी प्रतिभा का सम्मान करते हुए 'कोलकाता पोर्ट ट्रस्ट' को नया नाम 'श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट ट्रस्ट' करने की मंजूरी दी थी।
- कोलकाता बंदरगाह पहला प्रमुख बंदरगाह होने के साथ-साथ नदी के किनारे स्थित देश का पहला बंदरगाह है जो समुद्र से 203 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।
- यह हुगली नदी पर स्थित है। इस नदी में कई तीव्र मोड़ होने के कारण इसे एक कठिन नौवहन मार्ग माना जाता है।
- इस मार्ग को वर्ष भर नौवहन योग्य बनाए रखने के लिये नष्टिकर्षण (Dredging) संबंधी गतिविधियाँ चलती रहती हैं।
- वर्ष 1975 में निर्मित फरक्का बैराज ने इस बंदरगाह की समस्या को तब काफी कम कर दिया जब गंगा के पानी को भागीरथी-हुगली नदी प्रणाली की तरफ मोड़ दिया गया।

## देश के अन्य बंदरगाहों के परिवर्तित नाम:

- वर्ष 1988 में भारत सरकार ने 'नहावा शेवा पोर्ट ट्रस्ट' (Nhava Sheva Port Trust) का नाम बदलकर 'जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट' कर दिया।
- वर्ष 2011 में 'तूतीकोरन पोर्ट ट्रस्ट' का नाम बदलकर 'वी. ओ. चर्चिबरनार पोर्ट ट्रस्ट' कर दिया गया।
- 'एन्नौर बंदरगाह लिमिटेड' को जाने माने स्वाधीनता सेनानी एवं तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री के. कामराजार के सम्मान में 'कामराजार बंदरगाह लिमिटेड' नाम दिया गया।
- वर्ष 2017 में गुजरात के 'कांडला बंदरगाह' का नाम बदलकर 'दीन दयाल बंदरगाह' कर दिया गया।

## FAST

चीन का 'पाँच सौ मीटर एपर्चर वाला गोलाकार टेलीस्कोप' (Five-hundred-meter Aperture Spherical Telescope- FAST) सितंबर, 2020 में एलियन के संकेतों की खोज शुरू करेगा।



### प्रमुख बद्धि:

- जनवरी, 2020 में चीन द्वारा इस टेलीस्कोप की पहली तस्वीर वशिव के लिये सार्वजनिक की गई थी।
- ब्रह्माण्ड में पारलौकिक जीवन खोजने में मदद करने के अलावा यह टेलीस्कोप ब्रह्मांड संबंधी घटनाओं की एक वसितृत श्रृंखला का अध्ययन करने के लिये डेटा एकत्र करेगा जिसमें ब्लैक होल, गैस क्लाउड, पल्सर एवं अधिकतम दूरी की आकाशगंगाएँ शामिल हैं।
- इस टेलीस्कोप का व्यास लगभग 500 मीटर का है कति यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि यह केवल एक नश्चिति समय में रसीवर पर 300 मीटर व्यास वाले क्षेत्र को ही केंद्रति करता है।
- पूर्ण रूप से तैयार होने के बाद यह प्यूरटो रिको (Puerto Rico) में 'अरेसबो वेधशाला' (Arecibo Observatory) द्वारा कवर किये गए आकाशीय क्षेत्र को दो बार स्कैन करने में सक्षम होगा जो अब तक दुनिया में सबसे बड़े 'सगिल-एपर्चर रेडियो टेलीस्कोप' के लिये एक रिकॉर्ड है।
- इस टेलीस्कोप का उल्लेख पहली बार वर्ष 1994 में किया गया था कति वास्तविक मंजूरी वर्ष 2007 में दी गई थी।
  - इस टेलीस्कोप को 36-फुट लंबाई के त्रिकोणीय आकार के 4,500 पैनलों का उपयोग करके बनाया गया है जो एक डशि पैनल जैसी संरचना बनाते हैं। यह एक 33-टन का 'रेटिना' (Retina) उपकरण है जिसे 460-525 फीट की ऊँचाई पर लगाया गया है।
- इस टेलीस्कोप को चीन के दक्षिण-पश्चिमी प्रांत गुइझोउ (Guizhou) के पिंगटंग काउंटी (Pingtang County) में स्थापित किया गया है। यह दुनिया का सबसे बड़ा एवं सबसे संवेदनशील रेडियो टेलीस्कोप है। इसे 'आई ऑफ हेवन' (Eye of Heaven) के रूप में भी जाना जाता है।